रात्रिक्लास 12-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ईश्वरीय सर्विस में मजा बहुत है। क्योंकि ईश्वर आते हैं आकर पढ़ाते हैं। यह कोई जानते नहीं हैं। तुम बच्चों को अचानक लौटरी मिली है। इसलिए इसको पहले2 समझ नहीं सकते हैं। फिर धीरे2 समझते हैं बड़ी भारी लौटरी है। दिल होती है ऐसी लौटरी औरों को मिले। इसमें खुशी रहती है। ऐसे सर्विस कोई कर नहीं सकते। बच्चों को सर्विस में खुशी रहती है। क्योंकि पदमभाग्य खुल जाता है। जितना2 सर्विस करेंगे उतना नर वा नारियों को वा अपने बहन भाईयों को को सुख पहुंचाना होता है। इतना सुख पहुंचाने वाले तुम ब्राह्मणों के सिवाय और कोई नहीं होता। नशा चढ़ता है जितना हम औरों का कल्याण करते हैं इतना अपना करते हैं। जितना सर्विस करेंगे भाईयों की अथवा नर-नारियों का उतना इजाफा जमा होता जाता है। बाप भी खुश होते हैं कितना अच्छा मददगार बनते हैं। कितनी ऊंच तकदीर बनाते हैं। सो तो बाप के सिवाय कोई बना न सके। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। यह तो समझते हो जितना पढ़ेंगे, लिखेंगे होंगे नवाब... फिर भी राजा महाराजा बनना अच्छी तकदीर है। नम्बरवार प्रजा बनना अच्छह तकदीर नहीं है। बाप कहते हैं जब मुझे छोड़ते हो वा फारकती देते हो तो जाकर चण्डाल का जन्म लेंगे। और क्या। बच्चे अनुभव भी सुनाते हैं खुशी से। यह तो बच्चे समझते हैं बाप भगवान स्वर्ग का रचयिता है तो स्वर्ग की बादशाही देंगे। कामन बात है तुम बच्चों के लिए। जैसे लौकिक बाप से वरसा लेना कामन बात है बच्चे के लिए। तुम कल्प2 लौकिक बाप से भी वरसा लेते आये हो। बेहद के बाप से भी कल्प2 तुम ही लेते हो। यह कमान बात है। भक्ति मार्ग में आमदनी कुछ नहीं रहती। चाहते हैं श्रीकृष्ण की पूरी में जावें। कैसे जावें वह तो समझ नहीं सकते। तुम जानते हो इसलिए पुरुषार्थ करते हो। सर्विस हो तो यह हो। बहुत ऐसे चाहते हैं। बन्धन न हो तो हम यहां ही बैठ जावें। सन्यासी बन्धन तोड़कर गुम हो जाते हैं। वैराग्य हो जाता है। यहां तो भागने की बात नहीं। दुःख से वा कोई बात से भागना कमजोरी है। तुम बच्चे जानते हो भल मर्तबे वाले कितने भी हैं परन्तु उन्हों को तो कुछ मिलने का नहीं है। तुम जितना जास्ती पुरुषार्थ करेंगे उतना बहुत सुख मिलेगा। जो अच्छे समझदार सयाने हैं घर में रहते भी पुरुषार्थ करते हैं। बाप समझाते रहते हैं सभी तो नहीं यहां आकर रहेंगे। जैसे और आश्रम है। तुम बच्चे जानते हो हम बेहद के बाप के पास आये हैं। पूरा पुरुषार्थ कर बेहद के बाप से वरसा लेवें, विजय माला का दाना बनें। वह भी ऊंच नम्बर में। जिन्हों की माला सिकमरी जाती है। आठ रत्न गाये जाते हैं। मंदिर में भी 9रत्न के बनाते हैं। उन्हों को लक्की समझते हैं। वही लक्की थे। बाकी वह मंडी पहनने से लक्की नहीं बनेंगे। विश्व के मालिक बनने वाले ही लक्की ठहरे। बाकी वह पहनने से क्या फायदा। यह निशानी किन्हों की है यह कोई जानते नहीं। यह तो कर के जन्म-पत्री वालों ने सुनाया है। अभी तुम इतने लक्की बनते हो। जो तुमको वहां जन्म-पत्री आद दिखलाने की नहीं रहती। तुम पर बृहस्पत की दशा बैठ जाती है। वहां जन्म-पत्री देखने दिखाने की जरूरत ही नहीं। वहां यह सभी बातें कुछ भी नहीं होती। तुम संगमयुगी बच्चे जो हो तुम्हारी चलन बिल्कुल न्यारी। भल पुरुषार्थ करते हो। बहुत बच्चे हैं जिनमें दैवीगुणकम हैं क्योंकि योगबल नहीं है। योगबल हो तो यह पुरानी दुनिया एकदम भूल जाये। तुम बच्चों को बाप की भी याद आवे। तो शान्तिधाम सुखधाम की भी याद आवे। अच्छी चीज़ याद पड़ती है ना। ऊंच ते ऊंच है बाप फिर ऊंच ते ऊंच वरसा मिलता है। और सभी भूल देना चाहिए क्योंकि इन सभीसे दुःख मिला है। सभी सम्बन्धियों आद से दुःख ही मिला है। इसलिए कहते हैं यह सभी कुछ एक ही है। जो सुख और कोई दे नहीं सकता। सच्चा स्थाई सुख एक बाप ही देते हैं। समझते हैं औरों को भी सुख मिले। खुद सुख में हैं तो औरों को भी देते हैं। जैसे सोसलवर्कर्स होते हैं, जितना को सर्विस करते हैं, वह तो अल्प काल के लिए। बेहद का बाप कितनी अच्छी राय देते हैं। उन्हों को यह पता नहीं है कि ईश्वरीय सर्विस होती है जिससे 21 जन्म लिए सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं। खुद अपनी धारणा कर सोसाईटी की सर्विस करनी है। टाईम तो बहुत है। तुम बच्चों पास जो भी टाईम मिले तो इसमें लगाना चाहिए।

8घंटा तो मिलतीहै। जैसे गवर्मेन्ट की आठ घंटा सर्विस करते बांधे हुये हैं। यह सेवा भी ऐसी है जितना हो सकेआठ के बदले नव, 10 घंटेसारी हयाती ही इस सर्विस में लगा दें। इनको ही पुरुषार्थ कहा जाता। ऊंच पद भी पाते हो। प्रजा कोई कम नहीं बनता। बहुत बनती है। तुम हो अननोन .... तुम क्या कर रहे हो कोई समझ सकता नहीं सकते। तुम अपनी राजाई स्थापनकर रहे हो। समझते हो हम विश्व के मालिक बनते हैं तोऔरों को भी आप समान बनावें। ब्राह्मणियां कोशिश करती है जो यह भी विश्व का मालिक बने। फिर जितना जो पढ़ेंगे एमआबजेक्ट तो यह हैफिर जितना चाहे उतना पुरुषार्थ करे। दिखाया भी है फलो फादर-मदर। फादर-मदर कौन है? (शिव बाबा) शिव बाबा पुरुषार्थी है? (आदी देवी और आदीदेव-ममा, बाबा) आददेवी और कोई है? यह (बाबा) नहीं है? त्वमेव माताश्च पिता .... परमपिता वह है। प्रजापिता ब्रह्मा को परमपिता नहींकहा जाता। यह प्रजापिता है। ममा भी है। शिव बाबाइन द्वारा तुमको एडाप्ट करते हैं। यह दोनो है। इनको कहा जाता है माता-पिता। वह है परमपिता। फिर एडाप्ट करते हैं तुमभेरो बदली काम सम्भालो। औरों का कल्याण भी करना है। कल्याण न करेंगे तो ऊंच पद नहीं पावेंगे। बाबा सभीसे जास्तो म्युजियम पासन्द करते हैं। स्थाई कहेंगे। हाल देखना है तो चलो हमारे साथ हम दिखलावें। म्युजियम बड़े2 बनेंगे तो बहुत लोग आवेंगे। स्थाई एक दो को ले आते हैं दिखलाने लिए। बड़े आदमी को बुलाते हैं ओपनिंग शिरोमणी करने। सिर्फ नाम हो। इसलिए बाबा कहते हैं उनको समझाना है हम विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं। बोलो क्या चाहते हो। विश्व में शान्ति या और कुछ। भला शान्ति भी किस प्रकार की? कब हुई था? लाखों वर्ष कहने से भूल जाते हैं। सुख-शान्ति-पवित्रता थी। बाप है गरीब निवाज। भारतवासी भी गरीब हैं। उसमें भी गरीब है अहिल्याएं कुबजाएं।

साहुकार को फर्सत नहीं। गरीबों को धन की जरुरत रहती है। तुमकिसके पिछाड़ी हैरान हो? ज्ञान रत्न। इसको धन कहा जाता। बाप ने तुमको कितना खजाना दिया। कितना अकीचार धन देते हैं। बाप पूछते हैं मीठे2 बच्चों तुम विश्व के मालिक थेना। निश्चय है हम अमर लोक में जाकर जन्म लेंगे। ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर को खुशी होती है। जानते हैं हम जाकर यह बनेंगे। बच्चों को भी खुशी रहनी चाहिए। बेगर टु प्रिन्स। सेवा ही सेवा बाप का पैगाम पहुंचाना है। यह पुरानी तमो आरफन दुनिया है। कितने लड़ाई-झगड़े होते हैं। बाप आते हैं फिर आरफन कोई हो न सके। उनको कहा जाता है सुखधाम। यह है दुःखधाम। यहां कुछ मर्तबा होता नहीं। वहां अकाले मृत्यु होती नहीं। वहां तो सदैव खुशी ही खुशी। सुख ही सुख है। यहां तो न चाहते भी अनेक प्रकार के दुःख आ जाते हैं। इसको कहा ही जाता है खूनीनाहक खेल। तुम बच्चों को बहुत खुशी होती है बाप के आगे आने में। शिव बाबा ही याद आवेगा। चक्र भी याद आवेगा। उठते-बैठते चलते-फिरते तुम चक्रवर्तीराजा बन सकते हो। बाबा पास रहने वालों से भी ऊंच पद पा सकते हो। जानी-जानन हार कहते हैंपरन्तुऐसे नहीं सभी को बैठ जानते हैं। बाप कहते हैं मैं जानता सभी हूंपरन्तु बताऊंगा अपने समय पर। तुमको बाप के आगे आने में बड़ी खुशी होती है। कहते हैं बैठे रहें। परन्तु कितने ऐसे बैठेंगे। बाप कहते हैं घर में रहते भी तुम ऐसी सर्विस करते रहो तो बहुत ऊंच पद पा सकते हो। लौकिक बाप के आगे तो बहुत ही रहे। पारलौकिक बाप जो 5000 वर्ष के बाद मिला है तो क्यों नहीं दिल होगी रहने की। लौकिक बाप की भी परवरिश ली। सभी की प्रवरिश ली तो अभी क्यों नहीं बेहद के बाप की प्रवरिश लें। बाप भी बहुत बच्चों को देख खुश होते हैं। बाप बहुत प्यार करते हैं एक एक को। ठीक से सर्विस नहीं करते हो तो उनके ऊपर प्यार जाता नहीं। हरेक अपने दिल से पूछे हम कितनी सर्विस करते हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

*: : ***: : *